thearyasamaj.org

प्रकाशन की तिथि 01.09.2014

ओ३म्

एक प्रति मूल्य : रु० 4.00

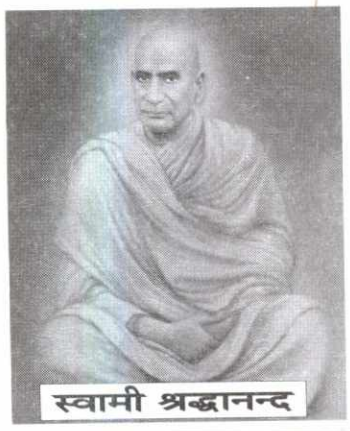

शुद्धि समाचार

सन् 1923 में स्वामी श्रद्धानन्द जी द्वारा स्थापित

भारतीय हिन्दू शुद्धि सभा का मासिक मुखपत्र

माता भूमिः पुत्रोऽहं पृथिव्याः । अथर्ववेद 12.1.12
भूमि मेरी माता है और मैं उस मातृभूमि का पुत्र हूँ।

वर्ष 37 अंक 9

"शुद्धि ही हिन्दू जाति का जीवन है"

वार्षिक शुल्क : 50 रुपये
आजीवन शुल्क : 300 रुपये

सितम्बर, 2014 विक्रम सम्वत् 2071 भाद्रपद-आश्विन

सनातन धर्मी नेता – पं. मदनमोहन मालवीय

दूरभाष : 011-23847244

परामर्शदाता : श्री हरबंस लाल कोहली ☼ श्री विजय गुप्त ☼ श्री सुरेन्द्र गुप्त ☼

प्रबन्धक : श्री नरेन्द्र मोहन वलेचा

अहं राष्ट्री संगमनी वसूनाम्

(14 सितम्बर हिन्दी दिवस)

–डॉ. श्रीलाल नेत्र विशेषज्ञ

संस्कृत हिन्दी सहित सभी भारतीय भाषाएँ हमारी सांस्कृतिक राष्ट्रीयता के पुण्य प्रवाह की वाहक हैं। भारत में व्यापारी के रूप में आये अंग्रेजों ने अब संस्कृत भाषा का अध्ययन किया, इसके वृहद् वाङ्मय के दर्शन किये तो उन्हें प्रतीत हुआ कि संस्कृत के रहते भारतीयों पर अधिक समय तक शासन नहीं किया जा सकता। संस्कृत एक ओर अपने में सम्पूर्ण ज्ञान विज्ञान तथा धर्म संस्कृति को समेटे हुए है वहीं दूसरी ओर भारत की सभी भाषाओं की, भारत के सभी प्रान्तों की संगम है। अंग्रेजों ने सावधानी पूर्वक भारत की जड़ पर प्रहार किया। उन्होंने सम्पूर्ण संस्कृत वाङ्मय का अंग्रेजी भाषा में अनुवाद कराया किन्तु अंग्रेजी साहित्य, विज्ञान तथा राजकीय विधि विधानों का संस्कृत में अनुवाद नहीं कराया। संस्कृत की सर्वोच्च उपाधि काशी, काञ्ची, मथुरा, माया में नहीं अपितु लन्दन में मिलने लगी। इस प्रकार संस्कृत की परम्परागत गुरुगुल पद्धति के पठन-पाठन को हतोत्साहित कर देववाणी संस्कृत को अंग्रेजी की आश्रित भाषा बना दिया गया। राजकीय सेवा में अंग्रेजी तथा लन्दन से प्राप्त संस्कृत की उपाधि को ही वरीयता दी जाने लगी। इस प्रकार भारत की एकता, भारतीय संस्कृति तथा सनातन भारत राष्ट्र को तोड़ने का योजनाबद्ध षड़यंत्र रचा गया जो कालान्तर में मैकाले की शिक्षा पद्धति के चलते दृढ़ से दृढ़तर होता गया। स्वाधीनता के उपरान्त भी हमारे दूसरी पंक्ति के राष्ट्रीय नेता इस षड़यंत्र के शिकार हो गये तथा आज अंग्रेजों द्वारा रोपित यह विषवृक्ष विशाल वटवृक्ष बनता जा रहा है।

संविधान सभा में भारत की राजभाषा पर चर्चा हो रही थी तब बाबा साहब डा. अम्बेडकर सहित अनेक सदस्यों ने संस्कृत को भारत की राजभाषा बनाने हेतु सशक्त तर्क दिये। किन्तु संस्कृत के अप्रचलित होने के कारण तथा सुगमता की दृष्टि से हिन्दी भाषा को यह गौरव प्राप्त हुआ। जो तर्क संस्कृत के राजभाषा बनाने के पक्ष में थे वे ही तर्क हिन्दी के पक्ष में भी थे। ये सभी तर्क न्यूनाधिक सभी भारतीय भाषाओं पर भी चरितार्थ होते हैं किन्तु उनका प्रभाव क्षेत्र प्रान्तीय अर्थात् सीमित है किन्तु हिन्दी जहाँ संस्कृत परिवार की सबसे नवीन भाषा है वहीं इसका प्रभाव क्षेत्र सम्पूर्ण सांस्कृतिक भारत (भारत, नेपाल, बांग्लादेश, पाकिस्तान, म्यांमार, श्रीलंका आदि) है। अंग्रेजों के विरुद्ध प्रथम तथा द्वितीय स्वाधीनता संग्राम (1856 तथा 1947) में सम्पूर्ण देश की सम्पर्क भाषा के रूप में हिन्दी का योगदान अद्वितीय रहा। अतः 14 सितम्बर, भारतेन्दू हरिश्चन्द्र जयन्ती पर संविधान सभा ने हिन्दी को भारत की राजभाषा के रूप में स्वीकार किया। यहाँ यह भी स्पष्ट करना आवश्यक है कि भारतीय मूल की सभी भाषाएँ तमिल, तेलुगु, कन्नड़, मलयालम, मराठी, गुजराती, बांग्ला आदि राष्ट्रीय भाषाएँ हैं, सभी का सांस्कृतिक स्रोत संस्कृत है, सभी का सांस्कृतिक केन्द्र भारत है, सभी भाषाएँ भावनात्मक एकता के सूत्र में बंधी हैं इसलिये किसी भी भाषा का परस्पर विरोध नहीं है और जो कुछ थोड़ा विरोध दिख रहा है उसका बीजारोपण अंग्रेजी ने किया है जिसे अब वोटों के याची राजनेता पानी दे रहे हैं।

हिन्दी राष्ट्रीयता का प्रवाह है इसे स्थापित करना राष्ट्रीयता को सुदृढ़ करना है जो वर्तमान समय में मेकाले के षड़यंत्र के कारण बहुत अधिक क्षरित हो चुकी है अतः हिन्दी को स्थापित करने हेतु अर्थात् राष्ट्रीयता की पुनर्स्थापना हेतु हमें कुछ उपाय करने पड़ेंगे – 1. केन्द्रीय सरकार का सभी कार्य हिन्दी में हो। 2. प्रान्तों के साथ पत्र व्यवहार हिन्दी तथा क्षेत्रीय दोनों भाषा में हो। 3. विदेश मंत्रालय का पत्राचार हिन्दी के साथ सम्बन्धित देश की भाषा में हो। 4. उच्च तथा तकनीकी शिक्षा सहित शिक्षा का माध्यम क्षेत्रीय भाषाएँ तथा हिन्दी हो। 5. अंग्रेजी का उपयोग देश के आन्तरिक प्रशासन में पूर्णतः बंद हो। 6. सभी भारतीय भाषाओं की वैकल्पिक लिपि देवनागरी कर दी जावे। 7. तकनीकी सहित सभी भारतीय विश्वविद्यालयों में हिन्दी, संस्कृत की उच्च शिक्षा का प्रबन्ध हो।

उपरोक्त उपायों के फलस्वरूप हिन्दी, संस्कृत तथा भारतीय भाषाएँ रोजगार से जुड़ जायेंगी। हिन्दी तथा क्षेत्रीय भाषाओं के पढ़ने वालों की बाढ़ आ जायेगी। भारत में कार्यरत विदेशी कम्पनियों को हिन्दी में ही व्यवहार करना पड़ेगा। भारत के बाजार से अंग्रेजी लुप्त हो जायेगी। आज विश्व में हिन्दी, बोलने वालों की दृष्टि से दूसरे तीसरे स्थान पर है कुछ ही वर्षों में हिन्दी विश्व की सर्वाधिक बोली जाने वाली भाषा बन जायेगी। हिन्दी में रोजगार के विपुल अवसर उपलब्ध होंगे विश्व भारत को पूजेगा, भारत माता पुनः अपना गौरव प्राप्त करगी।

हम हिन्दी हैं द्यावा पृथ्वी, की सबसे पहली संतति। हम उतरे हैं इस धरती पर, संस्कृति का शुभ यज्ञ रचाने।।

हम हैं मनुज मात्र में अग्रज, मानव है सब अनुज हमारे। हम आये हैं दीप शिखा बन, जग को राह दिखाने।।

– सोजत नगर, जिला पाली, राजस्थान-306104

भामाशाह का आह्वान –

भारतीय हिन्दू शुद्धि सभा महर्षि दयानन्द जी के आदेश पर एक धर्म, एक भाव, एक लक्ष्य बनाने पर कार्य कर रही है। देश में बदलती परिस्थिति को देखकर शुद्धि सभा ने यह निश्चय किया है कि दक्षिण भारत में तमिलनाडु, कर्नाटक, आन्ध्रप्रदेश, गोवा तथा तेलंगाना प्रदेशों में शुद्धि के कार्य को शीघ्र ही प्रारम्भ किया जाये।

शुद्धि के कार्य का महत्त्व भी गंगा नदी की शुद्धिकरण से कम महत्त्व का नहीं है। सभी धर्म प्रेमी हिन्दू तथा विशेषकर आर्य समाज से सम्बन्धित आर्य महानुभावों से विनम्र निवेदन है कि शुद्धि कार्य को इतना महत्त्व दें जितना कि भामाशाह ने राणा प्रताप को अपनी सेना को नये सिरे से खड़ा करने के लिये दिया था। आज इसकी परम आवश्यकता है कि आर्य (हिन्दू) धर्म से जुड़े सभी सज्जन शुद्धि कार्य की योजना को सफल बनाने के लिए भामाशाह की तरह दिल खोलकर आर्थिक सहायता प्रदान करें।

भारतीय हिन्दू शुद्धि सभा की ओर से उड़ीसा में एक गौशाला का निर्माण किया जा रहा है जिसमें प्रारम्भ में 100 गायें रखी जायेंगी।

आप अपनी सहायता चैक व मनीआर्डर द्वारा– भारतीय हिन्दू शुद्धि सभा के नाम 6949 बिरला लाइन्स, दिल्ली-110007 के पते पर भिजवा सकते हैं तथा मोबाइल नं. 09711258445 पर भी सूचित कर सकते हैं।

निवेदक :

नरेन्द्र मोहन वलेचा (महामंत्री)

हरबंसलाल कोहली (का. प्रधान)

शुद्धि समाचार में प्रकाशित लेखों में व्यक्त विचार एवं दृष्टिकोण सम्बन्धित लेखक के हैं। सम्पादक अथवा प्रकाशक का उनसे सहमत होना आवश्यक नहीं है।

thearyasamaj.org

सन्तान कितनी हों?

'जननी जने तो भक्त जण,
के दाता के शूर,
नहीं तो रहजे बांझणी,
मत गमाजे नूर।'

लोक प्रचलित उपरोक्त पंक्तियां हमारे समाज को एक बहुत बड़ा संदेश देती आ रही है।

आज भारत में अघोषित बहस चल रही है सन्तानें कितनी हों? कोई एक संतान को ठीक समझ कर एक पर रूक रहा है। इसके अपने तर्क हैं। तो कोई सन्तानों की कतार खड़ी कर रहा है। इसके भी अपने तर्क हैं।

मैं दोनों को गलत करार देता हूँ। दोनों स्वार्थ से प्रेरित हैं। किसी के चिंतन में यह प्रश्न नहीं है कि भविष्य का समाज, भविष्य का भारत देवों से भरा होना चाहिये या दानवों से। यह प्रश्न सभी प्रश्नों से ऊपर है। यह प्रश्न सभी प्रश्नों से अधिक महत्वपूर्ण और गम्भीर प्रश्न है।

देवता या देवत्व सिमट गया तो देवों की खैर नहीं। स्वार्थ छोडो। इतिहास उठा कर सीख लो। ऋग्वेद देखो या पौराणिक इतिहास। या तब से अब तक की घटनाओं को याद करो। परतंत्रता काल को भी याद करो। एक दानव, एक आतंकवादी, एक राक्षस सैकडों सीधे सरल लोगों को कष्ट देने के लिये काफी है। क्या तुम अपनी सन्तान को दानवों से भरी दुनिया में छोड़ कर जाना चाहते हो? याद रखो समाज का कोई अस्तित्व नहीं होता। एक-एक व्यक्ति मिलकर समाज निर्मित होता है।

शहरी शिक्षित लोग अब एक संतान होना उचित समझ कर एक ही सन्तान होने दे रहे हैं। यह आत्मघाती निर्णय है। इन लोगों के तर्क है- 'महंगाई खूब बढ़ गई है। एक से ज्यादा का ठीक से पालन और अच्छा शिक्षण दिलाना संभव नहीं है। मैं और मेरी पत्नी दोनों नौकरी पर जाते हैं बच्चे कौन संभालेगा। तीसरा तर्क इनका होता है अधिक बच्चे तो गंवारों के होते है हम शिक्षित है। कोई कोई तो बडा देशभक्त भी बन जाता है और कहता है देखते नहीं देश की आबादी कितनी बढ़ गई है। पर्यावरण पर कितना दबाव पड़ रहा है।

एक संतान की सलाह देने वाले और एक ही सन्तान होने देने वाले मेरी आगे लिखी बातों पर चिंतन मनन करें फिर अपना मन चाहा निर्णय लें।

मैंने जिनके-जिनके एक सन्तान है उनका कई वर्षों तक निरीक्षण किया है। वे बच्चे कुछ बुझे-बुझे से लगते हैं। प्राकृतिक हंसी, खुशी और खुला पन उनमें नहीं दिखता।

वे मित्रों में, स्कुल में, खेल क्लबों में भी जाते हैं लेकिन अंततः वे अपने को अकेला अकेला ही समझते हैं। उन्हें लगता है इतने विशाल अथाह संसार सागर में मेरा अपना कोई नहीं है। उनका अवचेतन मन खून के रिश्ते की मांग करता रहता है। यह फिर कुंठा में परिवर्तित हो जाता है। इस बात को वह बच्चा भी नहीं समझ पाता। इसका परिणाम उनकी प्रतिभा पर भी पड़ता है। अपराध प्रवृत्तियों की ओर आगे बढ़ने की संभावना इनमें अधिक रहती है चाहे अपराध व्यक्तिगत नीजी प्रकार के ही क्यों न हों। बच्चे के युवा होते होते ये सब बातें माता-पिता को भी कुछ-कुछ समझ में आ जाती हैं। अब क्या हो सकता है समय हाथ से निकल चुका होता है। फिर ऐसे माता-पिता जब दूसरों के अधिक संतानें देखते हैं तो अन्दर ही अन्दर जलते हैं। चिढते हैं।

यह जो समझा गया है कि एक संतान होने पर हम अच्छी परवरिश करेंगे, उच्च शिक्षा दिलवाएंगे वह एक ही सन्तान होने पर अत्यधिक, अनावश्यक लाड-प्यार में परिवर्तित हो जाता है। बच्चे को बड़ा आराम तलब बचपन मिल जाता है। मुह मांगी हर मुराद पुरी होती जाती है। परिणाम स्वरूप बच्चा अपव्ययी हो जाता है। जीवन में (बचपन में) कष्ट न उठाने से, तपस्या न करने से वह भावी जीवन के लिये कमजोर सिद्ध होता है। आगे के जीवन में थोड़ा भी कष्ट पडने पर उसे वह पहाड सा बड़ा लगता है। उसका भावी जीवन उसके लिये बडा ही दुखद बन कर रह जाता है।

आप समझाते हैं एक होगा तो उच्च शिक्षा दिलवाएंगे। उच्चशिक्षा के लिये ज्यादा संतानें होना या धन खर्च कभी आडे नहीं आता। यह मात्र भ्रांति है। उच्चशिक्षा की अनिवार्य शर्त है तपस्या। समस्याओं से ही प्रतिभाएं निखारती है। ऐशोआराम और दौलत से नहीं।

जिन्हें बाकी सब बातें तो समझ में आती है लेकिन समस्या ये है कि पति-पत्नी दोनों नौकरी पर जाते हैं बच्चे कौन संभाले।

अरे भैया! अपने माता-पिता को रखो अपने साथ। प्यार से रखोगे तो कौन रहने को तैयार नहीं होगा। प्रेम-प्यार अनिवार्य शर्त है बाकी सब बहाने हैं। उनके घर में रहने से बच्चे तो पलेंगे ही पलेंगे, घर स्वर्ग बन जाएगा, परिवार की प्रतिष्ठा बढेगी। घर छोटा है, कहाँ रखेंगे? मेरे भाई जगह दिल में चाहिये घर में जगह तो अपने आप बन जाती है।

कोई यह समझता है कि अधिक संतानें तो गंवारों के होती हैं तो उसकी सोच में भूल है। जो वास्तव में बुद्धिमान हैं वे जानते हैं कि अधिक संतान समृद्धि का कारण है। मानव को शक्ति कहा जाता है। एक मनुष्य जितना खाता है उससे कई गुणा उत्पादन करने की क्षमता रखता है। वही देश प्रगति करता है जिनके पास मानव शक्ति है। भविष्य भारत और नवीन का इसी कारण उज्ज्वल है। अमेरिका, कनाडा आदि को मानव शक्ति आयात करना पडता है और क्रय करना पडता है। कई देश सन्तानोत्पति को आज प्रोत्साहन दे रहे हैं। रूस में प्रसुती का अवकाश भारत से दुगुना है और प्रति सन्तान की उत्पति पर चार लाख रूपये प्रोत्साहन राशि सरकार जच्चा को देती है। मानव शक्ति देश की प्रगति का कारण है वैसे ही परिवार को भी समृद्ध बनाता है। अधिक संतानें खुशियों और धन से परिवार को मजबूती देती है। परवान चढ़ाती है।

आपको मेरी बात देश, काल और परिस्थितियों को देखकर बिल्कुल गलत लग सकती है। आप मुझ पर हंस सकते हैं। मुझे नकार सकते हैं। पता है इसका कारण क्या है? यह विज्ञापन का युग है। सरकार ने स्वतंत्रता के बाद से ही विज्ञापित करना प्रारंभ किया 'छोटा परिवार सुखी परिवार' दो या तीन बच्चों के विज्ञापन से होते हुए अब 'हम दो हमारे दो' के विज्ञापनों से देश गुंज रहा है। और इन विज्ञापनों की गुंज ने बड़े-बड़े विद्वानों को अपने पक्ष में कर दिया। पढ़े-लिखे और समझदार, देवता स्वरूप लोग ही सबसे पहले इन विज्ञापनों के झासे में फंसे।

मैं इसे आत्मघात और देश द्रोह समझता हूँ क्योंकि बुद्धिमान, समझदार, पुरुषार्थी, सरलमना और देश प्रेमी लोग अपनी संख्या घटा रहे हैं। परिणाम क्या होगा, सोचा है? भविष्य का भारत किनके हाथ में होगा? क्या यह स्वयं के कुल और भारत माता के साथ गद्दारी नहीं है?

आप पर्यावरण प्रदूषण का तर्क सोच रहे होंगे तो यह भी भ्रम है। विश्व का पर्यावरण बिगडा है तो वह पश्चिम दोषी है। अमरिका जैसे देश ग्लोबल वार्मिंग के मुख्य कारण हैं। भोग वाद प्रदूषण के लिये दोषी है। भारत की इतनी बडी जनसंख्या होते हुए भी वैश्विक पर्यावरण प्रदूषण फैलाने के दृष्टिकोण से हिस्सेदारी नगण्य है। हां, फिर भी यह तर्क गंभीर है अतः जितनी संताने हों उसके दुगुने पेड लगाओ और बड़े करो तो इस नैतिक दायित्व की भी पूर्ती हो जाती है।

यदि सभी के एक एक सन्तान ही होने लगे तो भाई, बहन काका, काकी, ताउ, मामा, मौसी, बुआ जैसे प्रेम भरे सामाजिक संबंध ही समाप्त हो जाएंगे।

अब फिर प्रश्न यह उठता है कि हमारे सन्तान किनती हों? सन्तान कितनी हों से भी महत्व पूर्ण प्रश्न है सन्तान कैसी हों? यदि आप समाज कंटक, अपराधी, आतंकवादी और देश द्रोही सन्तान को धरती पर उतारना चाहती/चाहते हैं तो बांझ रहना ही उत्तम है। अतः यदि आप माता बनना चाहती हैं तो पहले यह दृढ निश्चय करें कि मेरी सन्तान धरती पर बोझ न होकर मानवता की मूर्ति होगी। जन कल्याणकारी होगी न कि विध्वंसक होगी और जैसी आप संतान चाहें वैसे आपके प्रयत्न और संस्कार देने की तपस्या करने की तैयारी हों।

जो दम्पती अत्यधिक दरिद्र हों, दो समय का भोजन जुटाना मुश्किल हों अथवा शारीरिक रूप से वंशानुगत अनेक गंभीर बीमारियों से पीडित हों ऐसे दम्पत्ती को दो से अधिक संताने उत्पन्न नहीं करनी चाहिए।

संतान कितनी हों? के उत्तर में अपना मत बताने से पहले भारतीय समाज पथ प्रणेताओं का मत और विश्व के आदिज्ञान ग्रंथ ऋग्वेद को भी याद कर लेना उचित समझता हूँ। महर्षि मनु और महर्षि दयानन्द ने दस-दस संतान होना उचित कहा है। कम संतान होने की बात कहने वाला, उपदेश करने वाला न तो कोई ग्रंथ और न ही कोई महापुरुष, चिंतक या सन्त ही आदि से आजादी तक मुझे तो खोजने पर भी नहीं मिला। यदि कम संताने होना कल्याणकारक होता तो कोई तो बोलता। **इमां त्वमिन्द्र मीढवः सुपुत्रां सुभगां कृणु।**
दशास्यां पुत्रानाधेहि पतिनाधेहि पतिमेकादशं कृधि।।

आपके मन में यह तर्क आ सकता है कि तब महामारियां होती थीं और कई सन्तानें मर जाती थीं। बात ठीक है लेकिन जो बच जाती थीं उनकी संख्या भी औसत 6 से 7 रहती थीं। और आज भी बीमारियाँ कौनसी कम हैं। आज भी जवान-जवान लडके कई-कई गंभीर बीमारियों के शिकार हो कर मर रहे हैं। दुर्घटनाओं की भी सदा संभावना बनी रहती हैं।

कुछ महिलाओं का ऐसा भी सोचना है कि अधिक संतान होना स्त्री पर अत्याचार है। मेरी ऐसी सोच है कि प्रथम तो यह विचार किसी का मौलिक विचार नहीं है। कहीं से प्रायोजित है। अधिक संतानोत्पति से किसी स्त्री का स्वास्थ्य खराब नहीं होता। स्वास्थ्य खराब होता है कुपोषण से, फास्ट फूड खाने से, श्रम नहीं करने से, लेट उठने से, हीन विचार करने से, अप्राकृतिक जीवन जीने से। स्त्री के शरीर में विकृति जो आती है वह पहली सन्तान को जन्म देते समय ही आ जाती है। तो क्या स्त्री मां न बने?

वर्तमान काल को देखते हुए हमारे कम से कम चार से पांच संतानें होना योग्य है। मेरे सुयोग्य चार सन्तानें हैं। यदि किसी को मेरी बात पर आपत्ति हों तो उसे किसी व्यक्ति या वर्ग को कम सन्तान रखने की सलाह न देकर वह सरकार पर दबाव लाये कि सन्तान संख्या का कानुन लागु करें। जय हिंद!

496, शनिवार पेठ, इलिना अपार्टमेन्ट
पुणे-30 (महा.)

thearyasamaj.org

आर्यो! धर्माचार्यो!! अब आप भी तैयार होइये!!!

हिंदू–मुसलमानों को लड़ाने वाला लार्ड कर्जन का बंग–भंग एक्ट (1905 ई.) और भारत में काला–कानून कहलाने वाला रोलेट एक्ट (1919ई.) जैसा ही कांग्रेस की महारानी सोनिया की (सांप्रदायिक हिंसा निवारण एक्ट' था) । यदि इस चुनावी युद्ध में मोदी की जगह पर कांग्रेस जीत गयी होती, तो सर्व प्रथम यही बिल पास होता। तब इस खंडित भारत में किसी तरह रह रहे तथाकथित हम बहुसंख्यक हिंदुओं की वैसी ही दुर्दशा होती, जैसी 1947 में लंदन में भारत–पाक के बँटवारे पर हस्ताक्षर होते ही पाकिस्तान के बड़े–बड़े धनाढ्य, जमींदार, राजे–महाराजे, धार्मिक ठिकेदारों, महंतों, मठाधीशों पर अचानक संकटों के पहाड़ टूट पड़े थे।

जबरदस्त देश द्रोहियों के षडयंत्र में फंसी भारतीय राजनीति में मोदी जैसे निशंक, निष्कलंक नेता को अकेले पूर्ण बहुमत से उदित होना–ये बिखरे हुए राष्ट्रवादी भक्तों में योगर्षि रामदेव के योगशक्ति का ही चमत्कार माना जायेगा। मोदी के आने से सबसे बड़ा लाभ यही हुआ कि देश पुनः वैसी दुर्दशा के ब्लेक हॉल में गिरने से बच गया।

अब मोदी राज में हिंदुओं को कोई विशेष तोहफा मिले या न मिले, किंतु इस पर अब वैसी राजनैतिक हमले तो नहीं ही होंगे, जैसे कांग्रेसी–गुटों के राज में पक्षपात पूर्ण कानून बना–बना के हुआ करते थे। हिंदू समाज अब इन बाहरी हमलों से तो सुरक्षित हो चुका हैं, किंतु इसके अंदर जातिवाद, भाग्यवाद, धर्माधता, तरह–तरह के साई बाबा, निर्मल बाबाओं के पाखंडादि बढ़ते ही जा रहे हैं, इसी के चलते इसका अति तेजी से सामाजिक विघटन और आर्थिक–नैतिक भी पतन होने जा रहा है। इसको बचाने कि लिये योगर्षि रामदेव जैसे आर्य संतों को अब खुल कर आगे आना होगा। जिनके नजरों में न तो आर्य समाज अलग है और न कोई मठ–मंदिर भी किसी आर्य संस्थानों से भिन्न है। बल्कि ये सभी हम आर्य संतानों की ही बिखरी हुई सामूहिक संस्थाएं हैं। इनका संगठित सदुपयोग करके ही हम सत्य सनातन वैदिक धर्म को पुनः विश्वमंच पर गौरवान्वित कर सकेंगे।

इसके लिये सर्वप्रथम हमें समस्त हिंदू–विद्वानों की एक अंतर्राष्ट्रीय परिषद बनानी चाहिये, जिसका मुख्यालय काशी, अयोध्या, हरिद्वार जैसी ऐतिहासिक–धार्मिक तीर्थ नगरी में तो हो, किंतु इसके शाखा–कार्यालय प्रत्येक राज्य और जिलों में भी हो। इनमें शामिल होने वाले विद्वान्– चरित्रवान् धर्मज्ञों के लिये कुछ कसौटी भी हों। ऐसे विद्वानों की शीर्षस्थ–सभा ही धर्माधर्म का निर्णय करके आदेश दे कि साई बाबा, निर्मल बाबा, संतोषमाता, राधा देवी, पंचमुखी हनुमान आदि को पूजना चाहिये कि नहीं।

दुराग्रह मुक्त हुए ऐसे ही विद्वत्–परिषद् से हमारे धर्मग्रंथों का भी पुनरुद्धार होगा। धर्मग्रंथ के नाम पर 'अल्लोपनिषद' भी घुसेड़ दिये गये हैं। अनेक आर्ष ग्रंथों में मिलाकर किये गये हैं। इस तरह के अनेक अनार्ष ग्रंथों का भी बंग्लादेशी घुसपैठियों की तरह निकाल बाहर करना होगा। मनुस्मृति, बाल्मीकि रामायण, महाभारतादि का भी समुद्र मंथन की तरह नीर–क्षीर अलग करना होगा।

सबसे जरुरी है कि मुसलमानों का कुरान, ईसाइयों के बाइबल की तरह हिंदुओं (आर्यों) का भी एक मात्र मूल धर्मग्रंथ–वेद को भी सरल, सुगम और सर्व सुलभ बनाया जाये।

वेदों पर, सार्वदेशिक, परोपकारिणी, दयानंद संस्थान जैसे अनेक आर्य–प्रकाशन अनेक प्रशंसनीय महत्वपूर्ण कार्य कर चुके हैं। तथापि, 1600 पृष्ठों के महीन कागज पर, महीन टाइप में, पुस्तकाकार एक जिल्द में, स्वर रहित चारों वेदों का अर्थ सहित सुंदर मजबूत संस्करण जन–जन के लिये सस्ते दाम (मात्र दो सौ रूपये) में भी सुलभ हो सकते हैं।

हिंदुओं के अनेक व्रत–त्योहार भी स्पष्ट निर्णय न होने के कारण दो–दो तिथियों में बँट जाते हैं, जिससे बड़ी हास्यास्पद स्थिति हो जाती है। हिंदू समाज के सारे आर्य–विद्वानों की ऐसी विद्वत्–परिषद् से सारी भ्रांतियाँ भी मिटती रहेंगी। लुप्त हो रहे शास्त्रार्थों का प्रचलन एवं शंकाओं का समाधान भी होता रहेगा।

राजर्षि नरेंद्र मोदी जी के मंगलमय सुशासन की कामना में हम धर्म–प्रचारकों को भी अब मिलजुल कर धर्मोत्थान में जुट जाना चाहिये। इससे अधिक अनुकूल अवसर और नहीं मिलेगा।

–कवि.पं. आर्य प्रहल्लाद गिरि
निंगेश्वर मंदिर
निंगा, आसनसोल (प.बं.)

पंचगव्य और आयुर्वेद

संश्लेषित (एलोपेथिक) ओषधियों के दुष्प्रभाव से आज सभी परिचित हैं। अमेरिका जैसे तथा कथित विकसित देश में अस्पतालों के एक तिहाई बिस्तर उन रोगियों से भरे हैं जो पहले ली हुई दवाइयों के दुष्प्रभाव के कारण ग्रस्त हैं। प्रसिद्ध पाश्चात्य पॉप गायक माईकल जेक्सन की मृत्यु दवाइयों के दुष्प्रभाव से ही हुई है। हमारे आयुर्वेदवेत्ता ऋषियों ने ओषधियों की उपयुक्तता का सूत्र दिया है–

प्रयोगः शमयेद् व्याधि योऽन्यमन्यमुदीरयेत्।
नासौ विशुद्धः शुद्धस्तु शमयेद्यो न कोपयेत्।।

विशुद्ध औषधि वह है जिसके प्रयोग से रोग मुक्ति तो हो जाये किन्तु उसकी एवज में दूसरा रोग उत्पन्न न हो। इस दृष्टि से गोमूत्र, गोघृत, गोदुध, गोमय तथा गोदधि की उपादेयता की महिमा से हमारे आयुर्वेद ग्रन्थ भरे पड़े हैं–

कण्डूकिलासगुदशूलमुखाक्षिरोगान्, गुल्मातिसारमरूदायमयमूत्ररोधान्।
कासं सकुष्ठजठरकृमिपाण्डुरोगान्, गोमूत्रमेकमपि पीतमपाकरोति।।
–भावप्रकाशनिघण्टु, मूत्रवर्ग

'केवल गोमूत्र के पीने से खुजली, किलास, गुदा का दर्द, मुख और आँखों के रोग, गोला, दस्त लगना, वायुरोग, मूत्र रुकना, खाँसी, कोढ़, पेट के कीड़े और पाण्डुरोग (पीलिया) की निवृत्ति होती है।' अब गोघृत की महिमा देखिए –

गव्यं घृतं विशेषेण चक्षुष्यं वृष्यमग्निकृत्, स्वादु पाकरसं शीतं वातपित्तकफापहम्।।
बल्यं पवित्रमायुष्यं सुमङ्गल्य रसायनम्, सुगन्धं रोचकं चारु सर्वाज्येषु गुणाधिकम्।।
–भावप्रकाशनिघण्टु

'गोघृत नेत्रों के लिए हितहारी, वीर्य को बढ़ाने वाला, जठराग्नि को प्रदीप्त करने वाला, स्वादिष्ट, रसों को पचाने वाला, शीतल, वात, पित्त और कफ का नाशक है। गोघृत बलकारी, पवित्रता लाने वाला, आयु बढ़ाने वाला, मङ्गल करने वाला, सुगन्धित रसायन है और समस्त घृतों में श्रेष्ठ है।' चिकित्सा विज्ञानी पहले कहते थे कि घी खाने से रक्त में कोलेस्टाल बढ़ता है तथा इसके कारण उच्च रक्तपाच तथा हृदयघात होता है किन्तु यह सिद्ध हो गया है कि गाय के घी से नहीं अपितु भैंस के घी से ऐसी व्याधियाँ होती हैं अपितु हृदयाघात के रोगियों की चिकित्सा में शुद्ध गोघृत का उपयोग होता है। अब गोदधि (दही) के गुण भी देखिए –

स्निग्धं विपाके मधुरं दीपनं बलवर्धनम्। वातापहं पवित्रं च दधिगव्यं रुचिप्रदम्।।

'गाय का दही स्निग्ध, पाक में मधुर, जठराग्नि दीपक, बलवर्धक, वात–पित्त–नाशक, परम पवित्र, रुचिकारक, शीतल और आँवनाशक हैं।' भैंस के दही से वातरोग बढ़ता है वहीं गो–दधि से वातरोग (जोड़ों का दर्द) ठीक हो जाता है। गोदुग्ध के गुणों का वर्णन भी देखने योग्य है –

पथ्यं रसायनं बल्यं हृद्यं मेध्यं गवां पयः। आयुष्यं पुंस्वकृद्वारक्तपित्तविकारनुत्।।

'गाय का दूध पथ्य (सब रोगों और अवस्थाओं में सेवन करने योग्य) रसायन, बलकारक, हृदय के लिए हितकार, मेधाबुद्धि देने वाला, आयुवर्धक, पुरुषत्व शक्तिवर्धक, वातनाशक तथा रक्तपित्त के विकारों और रोगों का नाश करने वाला है।'

इतना ही नहीं – 'क्षीरात् परम नास्ति जीवनीयम्' गोदुग्ध से बढ़कर कोई जीवनदायक पदार्थ नहीं है। आधुनिक वैज्ञानिक शाकाहार में केवल गो–दुग्ध को सम्पूर्ण भोजन मानते हैं क्योंकि कोई भी व्यक्ति वर्षों तक केवल गोदुग्ध पीता हुआ शरीर को पुष्ट रखते हुए निरोग रह सकता है। पञ्चगव्य में गोबर भी डाला जाता है। गोबर को आयुर्वेद के ग्रन्थों में रोगों और शोक को दूर करने वाला कहा गया है। अब तो पाश्चात्य देशवासियों ने भी इस बात को स्वीकार किया है– 'इटली में अब भी हैजा या अतिसार के रोगी को ताजे पानी में ताजा गोबर घोलकर पिलाते हैं और जिस तालाब के पानी में हैजे के जन्तु उत्पन्न हो गये हों उसमें गोबर डालते हैं। उनका अनुभव है कि इससे हैजे के जन्तु तुरन्त मर जाते हैं।' कल्याण, गौअङ्क पृ. 413

गौ के दूध, घी और गोबर मूत्रादि में जो विशेषता है, वह विशेषता अन्य किसी भी पशु के दुग्धादि में नहीं है, इसीलिए वेद कहता है– "गोस्तु मात्रा न विद्यते।" गौ की किसी से भी तुलना नहीं की जा सकती।

thearyasamaj.org

घर की चारदीवारी के अंदर भी बालक अब सुरक्षित नहीं हैं!

– डा0 जगदीश गांधी, शिक्षाविद् एवं संस्थापक–प्रबन्धक
सिटी मोन्टेसरी स्कूल, लखनऊ

(1) घर की चारदीवारी के अंदर भी बच्चा अब सुरक्षित नहीं है :–

आज घर–घर में केबिल/डिश टी0वी0 हेड मास्टर की तरह लगे हैं। टी0वी0 की पहुँच अब बच्चों के पढ़ाई के कमरे तथा बेडरूम तक हो गयी है। प्रतिदिन टी0वी0 तथा सिनेमा के माध्यम से सेक्स, हिंसा, अपराध, लूटपाट, निराशा, अवसाद तथा तनाव से भरे कार्यक्रम दिखाये जा रहे हैं। बच्चे इन कार्यक्रमों से अपराध के रास्तों पर चलने की सीख ग्रहण करने के साथ ही आत्महत्या करने वाले समाचारों से आत्महत्या करने की भी प्रेरणा ले रहे हैं। ऐसा माना जाता है कि यदि एक घर में तलाक होता है तो इससे लगभग 1000 घर तलाक की प्रेरणा लेते हैं। इसी प्रकार यदि एक बच्चा आत्महत्या करता है तो इससे लगभग 1000 बच्चे आत्महत्या करने की प्रेरणा लेते हैं।

(2) असंतुलित तथा उद्देश्यविहीन शिक्षा हमें विनाश की ओर ले जाती है :–

आज संसार की भौतिक चमक–दमक से आकर्षित होकर बहुत से युवक बुरे रास्ते पर जा रहे हैं। गंदे सिनेमा के निर्माता धन की लालच में किशोर तथा युवा पीढ़ी को लक्ष्य करके बरबाद कर रहे हैं। एक कलयुगी बेटे ने जायदाद पाने की जल्दी में सात लाख की सुपारी देकर अपने बूढ़े माँ–बाप को ही मरवा दिया। हमारी यह पढ़ाई किस काम की है?यदि वह हमें भौतिक, सामाजिक तथा आध्यात्मिक शिक्षाओं का संतुलित ज्ञान न दें।

(3) प्यार से भरे वातावरण का घरों में अभाव :–

पहले संयुक्त परिवार में बालक को अगर अपने माँ–बाप से डाँट या मार भी मिलती थी तो उसको संभालने और समझाने के लिए परिवार में अन्य सदस्य उपस्थिति रहते थे, जिनकी गोद में आकर बच्चा अपने आपको सुरक्षित महसूस करता था। पुराने समय में घर में काम करने वाली आया या नौकरों का अपना अलग ही महत्व होता था। उनको परिवार के एक सदस्य के रूप में ही मान्यता मिली हुई थी। संयुक्त परिवार में यदि बच्चा अपने माँ–बाप से किसी बात के लिए डाँट भी खाता था तो उसे परिवार के किसी सदस्य के द्वारा या घर के नौकर या आया के द्वारा समझा–बुझा लिया जाता था। इस कारण से बालक के मन में कुंठा की भावना उत्पन्न नहीं होती थी।

(4) किशोरावस्था में बच्चों के मन को समझने की बहुत जरुरत है :–

वर्तमान समय में संयुक्त परिवार का स्थान एकल परिवारों ने ले लिया है। अभिभावकों के पास अपने बच्चों के लिए आपसी परामर्श के लिए समय नहीं है। माँ–बाप बच्चों की सोच को समझने का प्रयास नहीं करते जबकि किशोरावस्था में बच्चों को समझने की बहुत जरूरत होती है। इस उम्र में बच्चों में मानसिक, शारीरिक व हार्मोनल बदलाव होते हैं। बच्चों पर सामाजिक दबाव भी रहता है। इससे वे झुँझलाते हैं, जो चीज उन्हें पसन्द नहीं उस पर प्रतिक्रिया भी करते हैं। वे खुद अपना निर्णय लेना चाहते हैं। माँ–बाप बच्चे की क्षमता को समझे बिना उस पर अपना निर्णय थोपते हैं। इससे उन पर दबाव बढ़ता जाता है जो आगे चलकर दुखदायी रूख अख्तियार कर लेता है। आज बच्चों को इस तरह के अवसाद से बाहर निकालने के लिए उनकी अधिक से अधिक काउन्सिलिंग की जरूरत है।

(5) बालक की अभिरुचि के अनुसार ही कैरियर चुने :–

बच्चों की बौद्धिक लब्धता (आई0क्यू0) के अनुरूप ही विषय चुनने में उनकी सहायता करनी चाहिए। माता–पिता को चाहिये कि वह बच्चे की आई0क्यू0 की जांच जरूर कर लें। यह जांच कुछ परीक्षण और सवालों के आधार पर मनोविज्ञानी करते हैं। अभिभावकों को सहर्ष सहमत होना चाहिए कि जिन विषयों में उनके बच्चों की अभिरूचि हो उसी में उसका दाखिला हो तथा बच्चे के फेल होने पर उसे उत्तीर्ण करने के लिए विद्यालय पर अनावश्यक दबाव न डाले। साथ ही कैरियर ऐसा हो जो हमें रोटी कमाने के साथ आध्यात्मिक संतुष्टि भी प्रदान करें।

(6) परिवार व स्कूल प्रशासन का आपसी सहयोग जरुरी है :–

बालक का उसकी अभिरूचि के अनुकूल विषयों में दाखिला होने से ही उसकी रूचि तथा उत्साह निरन्तर बढ़ता है। आज की सच्चाई यह है कि कुछ अभिभावक अपने बालक की अभिरूचि के प्रति उदासीन दृष्टिकोण अपनाकर अपनी इच्छाओं की पूर्ति अपने बालक के माध्यम से करने का अत्यधिक उत्साह दिखाते हैं। वे स्कूल प्रशासन पर अपने इच्छित विषयों तथा कक्षा में बालक को दाखिल करने का हर प्रकार का उचित–अनुचित दबाव बनाते हैं। बच्चों के लिए यह आगे चलकर एक गम्भीर समस्या बन जाती है।

(7) बच्चे प्यार के भूखे होते हैं :–

बच्चों का मन समाज के दबावों से विकृत हो रहा है। बच्चों को सार्वजनिक रूप से बार–बार डांटने से वे हीन भावना से ग्रस्त हो जाते हैं। जिन बच्चों में उलझन, घबराहट, अनिद्रा और हीनता की भावना ज्यादा रहती है ऐसे बच्चों को परिवारजनों द्वारा प्यार से समझाने की जरूरत है।

(8) समाज की सबसे उभरती समस्या :

बच्चों से परीक्षा तथा कैरियर को लेकर अधिक से अधिक आशाएं रखने तथा उन पर अपनी इच्छाओं की पूर्ति के लिए अनावश्यक दबाव डालने के कारण बच्चों में दिन–प्रतिदिन तनाव का स्तर बढ़ता जा रहा है। सेक्स तथा हिंसा से भरी अपराधिक फिल्में, नकारात्मक दृष्टिकोण बढ़ाने वाले टी0वी0 सीरियल्स और घरेलू अशान्त वातावरण इस समस्या को और अधिक बढ़ा रहे हैं। इस कारण से बाल एवं युवा पीढ़ी में अपने जीवन के प्रति क्रूर व्यवहार विकसित हो रहा है।

(9) कामयाब व्यक्ति भी अपने जीवन में कभी नाकामयाब हुए थे:–

अमरीका के पूर्व राष्ट्रपति अब्राहम लिंकन 32 बार छोटे–बड़े चुनाव जीतने में नाकामयाब रहे थे। वह 33 वीं बार के प्रयास में कामयाब हुए और राष्ट्रपति के सर्वोच्च पद पर असीन हुए। वह पूरे विश्व के सबसे लोकप्रिय अमरीका के राष्ट्रपति बने। इंग्लैण्ड के पूर्व प्रधानमंत्री विंस्टन चर्चिल अपने स्कूली दिनों में पढ़ाई में अच्छे नहीं रहे। वह परीक्षा में फेल होने से कभी भी निराश नहीं होते थे और बाद में अपने आत्मविश्वास के बल पर वह इंग्लैण्ड के लोकप्रिय प्रधानमंत्री बने। उन्हें साहित्य के लिए नोबेल पुरस्कार भी प्राप्त हुआ।

(10) मन के हारे हार है मन की जीते जीत :–

एडिसन बल्ब का आविष्कार करने के दौरान 10,000 बार असफल हुए थे। इसके बावजूद भी एडिसन ने आशा नहीं छोड़ी उन्होंने एक और कोशिश की और इस बार वह बल्ब का आविष्कार करने में सफल हुए। महात्मा गांधी अपनी स्कूली पढ़ाई के दौरान थर्ड डिवीजन में हाई स्कूल परीक्षा पास हुए थे। महात्मा गांधी अपनी मेहनत, लगन एवं ईश्वर पर अटूट विश्वास के बलबूते जीवन में एक कामयाब व्यक्ति बने और अपने जनहित के कार्यो के कारण सदा–सदा के लिए अमर हो गये।

(11) असफलता सफलता की पहली सीढ़ी है :–

उत्तर प्रदेश राज्य के पूर्व मुख्यमंत्री श्री सम्पूर्णानंद दसवीं की परीक्षा में तीन बार फेल हुए। फिर भी उन्होंने हिम्मत नहीं हारी। उनके माता–पिता एवं परिवारजनों ने हमेशा उनका हौसला बढ़ाया। समाज सेवा एवं आशावादी दृष्टिकोण के बलबूते वह एक कामयाब एवं लोकप्रिय मुख्यमंत्री बने।

(12) प्राणायाम एवं प्रार्थना एक सकारात्मक सोच लाता है:–

स्वस्थ शरीर में स्वस्थ मस्तिष्क का वास होता है। मनुष्य जैसा सोचता है वैसा ही बन जाता है। दिनचर्या की शुरूआत योग तथा प्रार्थना से शुरू करने से हमारा जीवन योगमय हो जाता है। हमें बच्चों को प्राणायाम, खेलकूद एवं व्यायाम के द्वारा निरोग, तरोताजा तथा चुस्त बनने के लिए प्रेरित करना चाहिए।

(13) एक दिन में पूरा जीवन जीने का संकल्प उभरे :–

बच्चे रोजाना प्रातः उठते ही पहले घंटे में अपने को पूरे दिन के लिए तैयार करे। पहले घंटे में जो आप काम करेंगे उससे आपका दिमाग पूरे दिन के लिए तैयार होगा। 30 से 60 मिनट के दौरान प्रभु एवं उसकी सृष्टि की महिमा तथा अपने भविष्य की योजनाओं के बारे में सोचे और दोहराये। संसार के अधिकांश सफल लोगों की आत्मकथा पढ़ने से यह ज्ञात होता है कि वे अपने जीवन के प्रत्येक दिन की शुरूआत बड़े ही अच्छे ढंग से करके पूरा जीवन जीने का प्रयास करते थे।

(14) ईश्वर में विश्वास ही सभी शक्तियों का स्रोत है :–

बच्चों को प्रोत्साहित करें कि वे अपना पूरा विश्वास सभी शक्तियों के स्रोत ईश्वर पर लायें। ईश्वर पर विश्वास करें कि वह मुसीबत के समय सदैव हमारी मदद करता है। बच्चे स्वभाव से सरल, उदार तथा आध्यात्मिक होते हैं लेकिन आयु बढ़ने के साथ ही प्रायः अवगुणों की ओर आकर्षित होते हैं।

(15) अच्छे पारिवारिक वातावरण में अच्छे संस्कार ढलते हैं :–

बालक–पवित्र, दयालु एवं ईश्वरीय प्रकाश से प्रकाशित गुणों को लेकर जन्म लेता है। यदि बाल्यावस्था से बच्चों के संस्कार तथा आचरण में इन गुणों को विकसित करने के स्थान पर धूमिल करने का प्रयास माता–पिता, स्कूल तथा समाज द्वारा किया जायेगा तो यह बालक की आध्यात्मिक मृत्यु के समान है। परिवार, स्कूल तथा समाज का वातावरण भौतिक, सामाजिक तथा आध्यात्मिक गुणों के विकास के अनुकूल बनायें।

thearyasamaj.org

--सतयुग और कलियुग चर्चा--

'हम प्रयास करें तो कलियुग को सतयुग से अच्छा बना सकते हैं'

-मनमोहन कुमार आर्य, देहरादून।

वर्तमान युग कलियुग है। इससे पूर्व द्वापर, उससे पूर्व त्रेता तथा इससे भी पूर्व सतयुग व्यतीत हो चुके हैं। इसी प्रकार सतयुग, त्रेता, द्वापर, कलियुग व कलयुग के बाद पुनः सतयुग का क्रम आरम्भ होता है। बहुत से लोगों को यह कहते हुए सुनते हैं कि आजकल तो कलियुग है, इसलिए समाज में पापाचार, दुराचार, व्यभिचार, अनाचार, भ्रष्टाचार आदि बुरे कार्य हो रहे हैं या वृद्धि को प्राप्त हो रहे हैं तथा अच्छे कार्य कम हो रहे हैं। कल भी हमारे एक वयोवृद्ध पौराणिक मित्र पं. खादी प्रकाश शुक्ल ने ऐसे ही शब्दों को दोहराया। क्या यह सोच सही है?हमें लगता है कि ऐसा कहना हमारे लोगों का अज्ञान, अन्धविश्वास व कल्पना मात्र है, इनमें सच्चाई कुछ नहीं है। हम जानते हैं कि कलियुग की अवधि 4,32,000 वर्ष होती है। इससे दोगुनी अवधि अर्थात् 8,64,000 वर्षों का द्वापर युग होता है। इसी प्रकार कलियुग की अवधि से 3 गुणा अवधि 12,96,000 वर्षों का त्रेता युग तथा चार गुणा अवधि 17,28,000 वर्ष सतयुग के होते हैं। कलियुग के 5,114 वर्ष व्यतीत चुके हैं। मनुष्य की औसात आयु यदि 80 वर्ष भी मान लें तो कलियुग में एक जीवात्मा वा हमारी 640 बार जन्म व मृत्यु हो चुकी हैं और इतनी ही बार पुनर्जन्म भी हो चुका हैं यदि हमें बार-बार मनुष्य जन्म ही मिला हो, ऐसा स्वीकार करें। हमें इस जन्म की ही पूरी बातें याद नहीं हैं तो इससे पूर्व के 639 जन्मों की बातों का याद रहना तो कदापि सम्भव नहीं है। अतः द्वापर, त्रेता, सतयुग व इनसे पूर्व के युगों की बातों का स्मरण होने का तो प्रश्न ही नहीं है। अब यदि कोई व्यक्ति या विद्वान कहा जाने वाला व्यक्ति कलियुग को बुरा व सतयुग को अच्छा या कलियुग से कम बुरा मानता है तो वह अनुमान व कल्पना लोक में जीवन व्यतीत करने वाला ही कहा जा सकता है। उसकी मान्यता यथार्थ व सत्य के विपरीत है। यदि ऐसा है तो फिर सत्य या बुद्धि संगत मान्यता क्या है? इसका उत्तर खोजना होगा। आईये, कलियुग व सतयुग आदि युगों के बारे में किंचित और विस्तार से जान लेते हैं।

काल गणना में सूर्य, चन्द्र व पृथिवी व इनकी गतियों का महत्व है। सूर्य अपनी धूरी पर घूमता है। ऐसा माना व अनुभव किया जाता है कि वह अपने ही एक स्थान पर स्थित होकर अपनी धूरी पर घूम रहा है। कुछ मान्यतायें इस प्रकार की भी है कि वह भी किसी बड़े गृह की परिक्रमा कर रहा हो या आकाश में ईश्वर द्वारा किसी निर्धारित मार्ग पर चल रहा हो। सम्भावना तो यही है कि वह एक स्थान पर स्थित होकर अपनी धूरी पर घूम या गति कर रहा है और उसकी गति से चन्द्रमा व पृथिवी सहित इस सौर मण्डल के अन्य सभी ग्रहों व उपग्रहों को गति मिल रही है। हमारी पृथिवी अपनी धूरी पर भी घूम रही है और सूर्य की परिक्रमा भी कर रही है। यह अपनी धूरी पर घूम कर एक स्थान से चल कर पुनः उसी स्थिति में आने में 24 घंटे का समय लेती है। 24 घंटे एक दिन की संज्ञा है। ऐसे 7 दिनों का एक सप्ताह, होता है। पृथिवी एक वर्ष में सूर्य की एक परिक्रमा पूरी करती है जो लगभग 365 दिनों के बराबर होती है। इस एक वर्ष को बारह महीनों में बांटा गया है। हिन्दी के चैत्र, बैसाख, ज्येष्ठ, आषाढ आदि महीने अधिक तर्कसंगत, युक्तियुक्त व बुद्धि संगत हैं। 4,32,000 वर्षों की संज्ञा कलियुग, कलियुग का दोगुणा द्वापर, तीन गुना त्रेता और चार गुण सतयुग होता है जैसा कि पहले बताया गया है। यह चारों युगों की अवधि मिल कर 43,20,000 वर्षों की होती है जिसे एक चतुर्युगी कहा जाता है। ऐसी ही 994 चतुर्युगियों का एक सृष्टि काल होता है। इस सृष्टिकाल के 14 विभाग कर उनको मन्वन्तर नाम दिया गया है। प्रत्येक मन्वन्तर 71 चतुर्युगियों के बराबर होता है। 6 चतुर्युगियों का समय सृष्टि बनने का काल है जिन्हें सृष्टि काल में जोड़ने से ब्रह्मा अर्थात् ईश्वर का एक दिन होता है। यह कुल अवधि 1,000 चुतुर्युगियों के बराबर है जिसे ईश्वर या ब्रह्मा का एक दिन कहा जाता है। इतनी ही अवधि की बह्मा की एक रात्रि होती है। इन दोनों, दिन और रात्रि, का योग ब्रह्मा का एक दिन कहलाता जाता है। इस प्रकार से ब्रह्मा के एक दिन में 994 सतयुग, 994 त्रेता, 994 द्वापर और 994 कलियुग होते हैं 6 चतुर्युगियों का सृष्टि की उत्पत्ति का काल होता है। अभी तक 454 सतयुग, त्रेता, द्वापर व्यतीत हो चुके हैं और 454 वां कलियुग चल रहा है जिसके कि 5,114 वर्ष व्यतीत होकर अब 5,115 हवां वर्ष चल रहा है। समस्त उपलब्ध वेदादि शास्त्रों व अन्य ग्रन्थों का अध्ययन करने पर ज्ञान व विवेक से यह ज्ञात होता है कि सभी 454 सतयुग एक समान रूप से बहुत अच्छे नहीं थे और न हि इतनी ही संख्या वाले सभी त्रेता व द्वापर तथा व 453 कलियुग सतयुग व अन्य दो युगों से खराब व बुरे थे। अच्छाई व बुराई पर काल व समय का प्रभाव गौण होता है, मुख्य मनुष्यों का आचरण व व्यवहार हुआ करता है। आज हम जो बुरा आचरण अधिकांश मनुष्यों के जीवन में देखते हैं, उसका कारण इन मनुष्यों का अज्ञान, अविवेक, बुद्धि की अवनति, स्मरण शक्ति में कमी जिसके लिए भी हमारा भोजन, असंयमित जीवन ही मुख्यतः उत्तरदायी या जिम्मेदार है। अपने-अपने आलस्य व प्रमाद के कारण पूर्व कालों में वेदों का अध्ययन बन्द कर दिया गया जिस कारण से जीवन में आचरण व व्यवहार के क्षेत्र में अज्ञान छा गया और नाना प्रकार के मत, सम्प्रदाय, मजहबों के साथ अन्धविश्वास जिनमें मूर्तिपूजा, फलित ज्योतिष, बेमेल विवाह, युवावस्था से पूर्व विवाह, मृतकों का श्राद्ध, व्यवहार में चालाकी, छलकपट व स्वार्थ, लोभ, काम व क्रोध की प्रकृति मुख्य रूप से बाधक बनी है।

यदि आज लोग परस्पर मिल कर व मत-मतान्तरों के कुचक्र से निकलकर एक मत जो ज्ञान, विवेक, सत्य, सृष्टि क्रम के अनुकूल सिद्धान्तों व विज्ञान के अनुरूप हो, हमारा विचार है कि यह वैदिक मत ही हो सकता है, सभी स्वीकार कर लें और विद्वानों के बतायें मार्ग पर चलें, तो आज का युग, सतयुग से भी अच्छा युग बनाया जा सकता है। जब दो मत ही नहीं होगें तो सारे साम्प्रदायिक दंगे समाप्त हो जायेंगे। जन्म जाति व ऊंच-नीच की कृत्रिम सामाजिक व्यवस्था समाप्त हो जायेगी, गुण-कर्म व स्वभाव पर आधारित सामाजिक व्यवस्था स्थापित होगी, छोटे अपने बड़ों का आदर-सत्कार व आज्ञा पालन करेगें, सर्वत्र ईश्वर का ध्यान, सन्ध्या, यज्ञ, अतिथि सत्कार, पशुओं की रक्षा व संरक्षण व उनसे अधिकाधिक उपयोग लेने से समाज, देश व विश्व शान्ति का धाम बन जायेगा। ऐसा होने पर सतयुग, त्रेता, द्वापर व कलियुग सभी अच्छे व श्रेष्ठ होगें और आजकल की तरह यह कोई नहीं कहेगा कि कलियुग होने के कारण लोग बुरा कार्य करते हैं।

हम यह भी उल्लेख करना चाहते हैं कि आज से 150 वर्ष पूर्व हमारे पूर्वजों के आलस्य व प्रमाद के कारण हमनें सृष्टि के आरम्भ में ईश्वर से प्राप्त हुए वेदों की संहिताओं व वेदों के शब्द-अर्थ-ज्ञान को विलुप्त होने की स्थिति में पहुंचा दिया था जिसको हमारे ही पूर्वजों ने विगत 19,60,853 सहस्र वर्षों तक सुरक्षित रखा था। महर्षि दयानन्द को इन वेदों व वैदिक ज्ञान को प्राप्त करने में अत्यन्त कठोर परिश्रम व तप करना पड़ा। ईश्वर की कृपा, महर्षि दयानन्द के कठोर तप व पुरूषार्थ तथा कुछ वेद प्रेमी पूर्वजों के कारण वेद सुरक्षित ही नहीं हैं अपितु आज हमारे पास वेदों का ऐसा सुन्दर, सुरूचिपूर्ण एवं भव्य संस्करण उपलब्ध है, जैसा हमारे विचार से विगत 5-6 हजार वर्षों से तो हमारे पास नहीं था। यह आधुनिक विज्ञान के कारण ही सम्भव हुआ है। आज जितना वैदिक साहित्य, वेदों की मन्त्र संहितायें, वेदों के अनेक विद्वानों के हिन्दी-अंग्रेजी भाष्य व इतर वैदिक साहित्य हमारे पास व्यक्ति रूप से है, हमारा अनुमान है कि विगत 5 सहस्रों में हमारे देश के किसी एक प्रमुख व्यक्ति के पास नहीं था जिसका कारण हमारा यह अनुमान है कि हम कागज बनाना व भाषा व चित्रों के आजकल की भांति मुद्रण से या तो परिचित नहीं थे, या फिर भूल गये थे। अतः आज का युग वैज्ञानिक युग व अनेक अपूर्व उपयोगी वस्तुओं की उपलब्धता के कारण सतयुग से कुछ कम भी नहीं है। जो बुरा है उसके दोषी हम स्वयं हैं व हमारा समाज व विश्व के सभी मनुष्य हैं। एक पंक्ति में यह भी कहना समीचीन होगा कि कलियुग में ही महर्षि दयानन्द ने विलुप्त हो रहे वेदों व उसके सत्य अर्थों का प्रकाश किया, इस कारण भी कलियुग बुरा युग कदापि नहीं कहा जा सकता।

हम जब आज के युग पर विचार करते हैं तो हम पाते हैं कि आज का युग अनेक मायनों में पूर्व के सभी युगों से श्रेष्ठ व उत्तम है। आज हमारे पास अच्छे भवन, अच्छे वस्त्र, वेश-भूषायें व पहनावें, अच्छा भोजन, वेदों का अन्य शास्त्रों का वैदिक आर्ष ज्ञान, यात्रा के उपकरण व मशीनें यथा साईकिल, स्कूटर, मोटर साइकिल, कार, बस, रेलगाड़ी, अच्छी सड़कें, वायुयान, जलयान, मोबाइल व लैण्डलाइन फोन, कम्प्यूटर, कैलकुलेटर, आयुर्वेद व एलोपैथी आदि का चिकित्सा विज्ञान आदि ऐसी उन्नत व विकसित चीजें हैं जो पूर्व कालों में वर्तमान स्वरूप व स्थितियों में थी या नहीं, कह नहीं सकते। आज का हमारा जीवन सुखद एवं शान्ति का धाम है। आवश्यकता बस सच्ची सोच की है। यदि दृष्टिकोण व व्यवस्था ठीक होगी, ज्ञान व विवेक पर आधारित होगी, अच्छे लोगों व व्यक्तियों के हाथों में होगी तो आज का कलियुग, सतयुग से भी अच्छा हो सकता है और होगा और हम सब निश्चिन्त, सुखी व शान्ति से युक्त जीवन व्यतीत करेगें। इस लेख में हम यही कहना, बताना या समझाना चाहते हैं कि समय या काल सदा सर्वदा एक सा रहता है, लोगों के आलस्य, प्रमाद, पुरूषार्थ आदि कारणों से यह अच्छा व बुरा का जाता है, उसमें काल का कोई दोष या मुख्य कारण नहीं होता, मनुष्यों के कर्म ही कारण होते हैं। यदि हम सारी व्यवस्थाओं को ठीक व निष्पक्ष बना लें और अविद्या का नाश तथा विद्या की वृद्धि के ही नियम का पालन करें तो आज के युग व समय को सतयुग की कल्पना से भी अच्छा व श्रेष्ठ बनाया जा सकता है। पाठक हमने सहमत होगें, ऐसी हम आशा करते है।

पताः 196, चुक्खूवाला-2
देहरादून-248001

thearyasamaj.org

शंका और समाधान

–स्व. अभयदेव दर्शनाचार्य

प्रश्न . शौच किसे कहते हैं ?

उत्तर . आन्तरिक मन तथा वाह्य शरीर, वस्त्र आदि की शुद्धि करना ही शौच कहलाता है।

प्रश्न . मन शुद्धि कैसे होगी ?

उत्तर . स्वाध्याय, ईश्वर का चिन्तन व धर्म का पालन करने से मन राग द्वेष से रहित व शान्ति से भरा रहता है। मनुस्मृति नामक ग्रन्थ में कहा है मनः सत्येन शुध्यति–अर्थात् सत्याचरण से मन शुद्ध होता है। मन तथा सत्याचरण दोनों एक दूसरे के आश्रित हैं। मन की शुद्धि से सत्याचरण होता है तथा सत्याचरण से मन शुद्ध होता है।

प्रश्न. सन्तोष का पालन कैसे होगा ?

उत्तर . इच्छाओं को कम करने से सन्तोष का पालन होता है। इच्छाओं का कोई अन्त नहीं है, जिसकी इच्छायें जितनी न्यून होती हैं वह उतना ही अधिक सुखी व सन्तुष्ट होता है और असन्तोषी मनुष्य धन धान्य से परिपूर्ण होने पर भी सदा दुःखी रहता है।

प्रश्न . तप किसे कहते हैं ?

उत्तर . सर्दी गर्मी, भूख–प्यास, हानि–लाभ, मान–अपमान का सहन करना ही तप कहलाता है। यदि किसी विशेष प्रयोजन, विद्या की प्राप्ति, धर्म प्रचार व देश की सेवा इत्यादि के लिये सर्दी–गर्मी आदि को सहन करें तो वह तप होगा, परन्तु बिना प्रयोजन ही गर्मी आदि में कष्ट सहन करना तप नहीं है।

प्रश्न . तप से क्या लाभ है ?

उत्तर . योगदर्शन द्वितीय पाद में लिखा है **कायेन्द्रियसिद्धिरशुद्धिक्षयात्तपसः** अर्थात् तप का अनुष्ठान करने से शरीर बलवान् सर्दी गर्मी आदि को सहन करने में समर्थ और रोग रहित हो जाता है तथा चक्षु आदि इन्द्रियां भी निपुण हो जाती हैं।

प्रश्न . स्वाध्याय करने से क्या लाभ होता है ?

उत्तर . स्वाध्यायशील मनुष्य के लिये पुस्तक अच्छा मित्र है। ज्ञान को शुद्ध व उत्कृष्ट बनाने के लिये स्वाध्याय आवश्यक है। पुस्तकें सदा बुरे कर्मों से हटाकर शुभ कर्मों की ओर प्रेरित करती हैं, इसलिए प्रत्येक दिन नियमित रूप से स्वाध्याय करते रहना चाहिये।

प्रश्न . ईश्वर प्रणिधान का क्या तात्पर्य है ?

उत्तर . ईश्वर की भक्ति करना तथा प्रत्येक कर्म में ईश्वर को साक्षी मानना और निष्काम कर्म करना ही ईश्वर प्रणिधान है।

प्रश्न . क्या शीर्षासन, पद्मासन, व सिद्धासन आदि को करना ही योग है ?

उत्तर . ये आसन योग के अंग हैं सम्पूर्ण योग नहीं। योग के आठ अंग हैं उनमें एक आसन भी है। आसनों के द्वारा शरीर स्वस्थ व रोग रहित होता है परन्तु योग के साथ उनका सम्बन्ध बहुत की कम है।

प्रश्न . प्राणायाम करने से क्या लाभ होता है ?

उत्तर . प्राणायाम करने से मन एकाग्र होता है। बिना प्राणायाम किये किसी भी मनुष्य का मन एकाग्र नहीं हो सकता है। प्राणों को रोकना ही प्राणायाम है। प्राणों को रोकने से मन भी रूक जाता है और मन के स्थिर होने से इन्द्रियां भी स्थिर हो जाती हैं। अतः प्रत्येक दिन न्यून से न्यून 8 से 9 प्राणायाम जरूर करने चाहिये।

प्रश्न . 30 प्रत्याहार किसे कहते हैं ?

उत्तर . ध्यान का अभ्यास करते हुये नेत्र को बन्द कर लेते हैं, परन्तु श्रोत्र, नासिका के द्वारा बाह्य शब्द व गन्ध की अनुभूति होती रहती है लेकिन मन के एकाग्र होने से चक्षु आदि इन्द्रिय का रूप आदि विषयों से सम्बन्ध कट जाता है, इसी को प्रत्याहार कहते हैं।

प्रश्न . धारणा किसे कहते हैं ?

उत्तर . "देशबन्धश्चित्तस्य धारणा" अर्थात् अपने मन को नासिका के अग्र भाग तथा हृदय आदि स्थान विशेष में मन को विचार मात्र से स्थिर करना धारणा कहलाती है। यह भी मन को स्थिर करने का उपाय है।

प्रश्न . ध्यान किसे कहते हैं ?

उत्तर . ध्यै चिन्तायाम् धातु से ध्यान शब्द बना है। ध्यान का अर्थ होता है चिन्तन करना। यदि नेत्र को बन्द करके ईश्वर के गुण, कर्म, स्वभाव का चिन्तन करते हैं तथा मध्य में कोई अन्य विचार नहीं आता है तो उसी को ध्यान कहते हैं।

प्रश्न . समाधि किसे कहते हैं ?

उत्तर . योग दर्शन तृतीय पाद के तृतीय सूत्र में लिखा है – तदेवार्थमात्रनिर्भासं स्वरुपशून्यमिव समाधि – अर्थात् जब लम्बे काल तक ध्यान का अभ्यास करते करते ईश्वर का साक्षात्कार हो जावे और ईश्वर के न्याय, दया, पक्षपातरहितता, राग द्वेष का अभाव आदि गुण योगी में आ जाये तो उसी को समाधि कहते हैं। ध्यान ही लम्बे अभ्यास के बाद समाधि बन जाता है।

प्रश्न . कर्म किसे कहते हैं ?

उत्तर . प्रवृत्तिर्वागबुद्धिशरीराम्भः (न्याय अ. 9, आ.9 सूत्र–17,) अर्थात शरीर, मन व वाणी के द्वारा चेष्टा विशेष करना ही कर्म कहलाता है।

प्रश्न : कर्म के कितने भेद हैं– (क) शुभ (ख) अशुभ (ग) मिश्रित व निष्काम।

(क) शुभ – जिन कर्मों का अन्तिम परिणाम स्वयं, समाज व राष्ट्र के लिये सुखदायी हो वे शुभ कर्म हैं, जैसे दान देना सत्य बोलना, ईश्वर भक्ति करना इत्यादि।

(ख) अशुभ कर्म : जिन कर्मों का अन्तिम परिणाम बुरा ही होता है उसे अशुभ कर्म कहते हैं जैसे चोरी, मिथ्या भाषण आदि।

(ग) मिश्रित – जो कर्म पाप व पुण्य दोनों से युक्त होते हैं वे मिश्रित कर्म कहाते हैं जैसे कि कृषि का कर्म। कृषि में अनेक कीडे मर जाते हैं इसलिये यह पाप से युक्त है तथा कृषि के द्वारा अनेक लोगों का भरण पोषण होता है इसलिये यह पुण्य से युक्त भी है। तथा दोनों से युक्त होने के कारण कृषि मिश्रित कर्म है।

(घ) निष्काम कर्म – निष्काम कर्म केवल योगी ही कर सकता है। जिस कर्म को करते हुए धन, सम्मान व पुत्र इन तीनों की इच्छा नहीं की जाती है वे निष्काम कर्म कहाते हैं।

सृष्टिकर्त्ता ईश्वर को हमें विद्वानों की भाँति जानना चाहिये

–डॉ. सुदर्शन देव आचार्य

ओ३म् वेनस्तत्पश्यन्निहितं गुहा सद्यत्र विश्वं भवत्येकनीड़म्
तस्मिन्निदं सं च विचैति सर्वं सओतः प्रोतश्च विभुः प्रजासु। यजु. 38/8

पदार्थ – हे मनुष्यो ! (यत्र) जिसमें (विश्वम्) सब जगत् (एक नीड़म्) एक आश्रयवाला (भवति) होता (तत) उस (गुहा) बुद्धि वा गुप्त कारण में (निहितम्) स्थित (सत्) नित्य चेतन ब्रह्म को (वेनः) पण्डित विद्वान् जन (पश्यत्) ज्ञानदृष्टि से देखता है (तस्मिम्) उसमें (इदम्) यह (सर्वम्) सब जगत् (सम्एति) प्रलय समय में संगत होता (च) और उत्पत्ति समय में (वि) पृथक् स्थूलरूप (च) भी होता है। (सः) वह (विभूः) विविध प्रकार व्याप्त हुआ (प्रजासु) प्रजाओं में (ओतः) ठाढे सूतों में जैसे वस्त्र वैसे ओत–प्रोत हो रहा है। वही सबको उपासना करने योग्य है।

भावार्थ – इस देवमन्त्र में स्वयं वेदभगवान् समस्त मानव समूह को सम्बोधित करते हुये कह रहे हैं– हे मनुष्यो ! जिस परमतत्व परमपिता जगत्निर्माता परमेश्वर को विद्वान् ज्ञानी ही जान व पा सकते हैं, जो समस्त दृश्य–अदृश्य संसार का आधार है, जो सारे ब्रह्माण्ड को बनाता व समय हो जाने पर प्रलय कराता है और जो विश्व के चप्पे–चप्पे में व्याप्त है व सारा विश्व जिसके लिए एक घोंसले की भान्ति है उस ऐसे गुणों के भण्डार ईश्वर को तुम जानों और उसकी भक्ति विशेष से उपासना करो।

व्याख्या – इस ऋचा में परमपिता परमेश्वर का स्वरूप क्या है? वह किन–किन गुणों से युक्त हुबा सारे संसार को गति दे रहा है, आदि विषयों पर कहा गया है, सर्वप्रथम हमें यह बात अपने मस्तिष्क में बैठा देनी होगी कि– जैसे दृश्यमान भौतिकचीजों को कोई ना कोई बनाने वाला होता है वैसे ही यह विशाल ब्रह्माण्ड भी किसी न किसी के द्वारा बनाया गया है, उसको बनाने वाला जरुर कोई है और वह ईश्वर है क्योंकि संसारस्थ किसी भी आदमी में यह सामर्थ्य नहीं है, ना हो सकता है जोकि संसार को बना लें और उसका पालन–पोषण कर लें अतः हमें इस तथ्य को जरुर स्वीकार करना होगा।

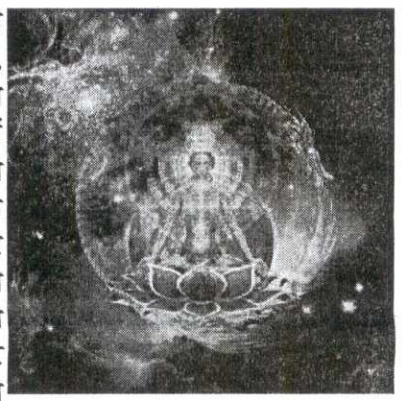

मन्त्र का द्वितीय कथन है कि ईश्वर में ही यह सारा संसार प्रलय को प्राप्त होता है, यह बात भी ठीक है जिसने बनाया उसी का यह भी काम होता है कि उसका देखभाल करता रहे और समय होने पर अर्थात् कोई भी चीज जर्जर हो जाने पर उसको तोड़–मोड़ के अथवा फेंक कर नया बनाये। अर्थात् एक सृष्टि का समय है 4 अरब 32 करोड़ वर्ष इतने समय हो जाने पर फिर नये सिरे से प्रारम्भ करने के लिए सृष्टि का प्रलय भी कराता है। मन्त्र में आगे कहा कि हे मनुष्यों ! तुम्हें तो यह सृष्टि विशाल लग रही है, तुम इसके पार–अपारता को नहीं समझ पाते पर ईश्वर के सामने यह संसार एक छोटा सा घोसला के समान है तो उसके लिए सृष्टि बनाना–बिगाड़ना वैसे ही है जैसे हम छोटे–मोटे कुटियों को मन लगने से तोड़ देते हैं और नया बना लेते हैं, पुनः आगे कहा जा रहा है– वह चेतन ब्रह्म ये सब कार्य करता है और समस्त जगहों–स्थावर–जंगम प्राणियों में जैसे सूत वस्त्र में सब जगह विद्यमान रहता है वैसे रहता है। अन्त में कहा–परमात्मा के इन विस्तृत गुणों को हर कोई नहीं जान समझ सकता, विद्वान् ही समझ सकते हैं, और उसको प्राप्त कर सकते हैं, अतः हमें भी विद्वान् बनने का प्रयत्न करने के साथ–साथ परमात्मा की इस असीम शक्ति को समझकर दुःखमय भववन्धन से मुक्ति पानी ही होगी। इसी में शाश्वत् सुख निहित है।

thearyasamaj.org

परोपकारी व्यक्तित्वः चौधरी चन्द्रभान

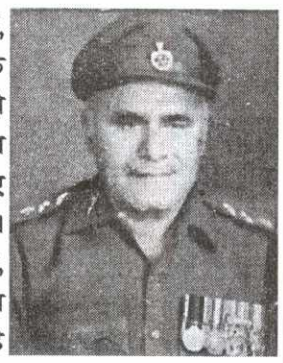

चौधरी चन्द्रभान जी यों तो सद्गुणों की खान हैं, परन्तु उनका सबसे बड़ा गुण है मानवता। चौधरी साहब एक बहुत अच्छे इंसान हैं। इंसान के दुःख को देखकर तड़प उठते हैं। भूकम्प तथा बाढ़ जैसी प्राकृतिक आपदाओं से पीड़ित लोगों की सेवा के लिए चौधरी साहब ने जो विशेष कार्य किए हैं। उनका अलग से उल्लेख करना आवश्यक है। उत्तरकाशी, लातूर एवं गुजरात में जो भीषण भूकम्प आए, उससे मानवता सिहर उठी। चौधरी साहब ने इन भूकम्प पीड़ितों की मदद के लिए दिन–रात एक कर दिया। कपड़े खाद्य सामग्री एवं रुपये, पैसे आपने घर–घर जाकर एकत्र किये। सार्वदेशिक व प्रादेशिक सभा कार्यालय में जमा करवाये। बिहार, बंगाल में आई बाढ़ो तथा उड़ीसा में आए भयंकर तूफान के समय भी चौधरी साहब के सेवा कार्यों की तत्परता में कोई कमी नहीं आई।

चौधरी चन्द्रभान जी जैसे महात्मा सचमुच धरती पर दुखियों का दुख कम करने के लिए ही अवतरित होते हैं।

सच्चे समाजसेवी एवं मानवता को समर्पित महामानव नींव के पत्थर की तरह कार्य करते हैं तथा उन्हीं की बुनियाद पर मानवता टिकी रहती है। माननीय चौधरी साहब ऐसे ही महामानव हैं जिन्होंने मानवता की बुनियाद के यज्ञ में स्वयं को समर्पित कर दिया है।

आर्यसमाज की अनेक संस्थाओं, कल्याण कोष, आत्मशुद्धि आश्रम तथा परमेश्वरी देवी धर्मार्थ ट्रस्ट भारतीय हिन्दू शुद्धि सभा के माध्यम से चन्द्रभान जी चौधरी रात दिन दीन–दुखियों की सेवा में व्यस्त रहते हैं। गरीब कन्याओं का विवाह करवाना, वृद्ध व बेसहारा लोगों को सहारा देना, गरीबों को चिकित्सा सहायता उपलब्ध करवाना जैसे पुनीत एवं मानवीय कार्य चन्द्रभान जी की दैनिक दिनचर्या के अहम् हिस्से हैं। परमेश्वर से सही प्रार्थना है कि परोपकार की प्रतिमूर्ति चन्द्रभान जी को दीर्घ आयु प्रदान करें। वे 100 वर्ष तक मानवता का कार्य करते रहें।

– हरबंसलाल कोहली

गौरव शाली व्यक्तित्व के धनी महाशय गोविन्द राम जी आर्य

प्रेरक व्यक्तित्व, धार्मिक मान्यताओं के प्रति समर्पित ऊर्जावान, परोपकारमय आदर्श जीवन, मानव समाज का प्रेरणास्त्रोत बन जाते है, तथा शाश्वत नियमों पर आधारित, आत्मिक शक्ति के बल पर पूर्ण संघर्ष द्वारा शुद्ध हृदय से एवं निष्काम भाव से किए गए परोपकारमय कार्य क्रियात्मक रूप में तथा सफलतापूर्वक किए जाते है, तो वे जनजीवन के लिए आदर्श एवं अति महत्वपूर्ण प्रमाणित होते हैं।

जब मैं स्व. महाशय गोविंदराम जी के जीवन के क्रियाकलापों पर दृष्टिपात करता हूँ तो पाता हूँ कि उनका जीवन आर्य समाज के विद्वानों, सन्यासियों एवं कर्मयोगी विभूतियों के समान निर्मल तथा उज्जवल था। सादगी का जीवन व्यतीत करते हुए तथा सजग रहते हुए, समाजिक सुधारों के प्रति उनके हृदय में विशेष तड़प थी।

महर्षि दयानन्द सरस्वती के कार्यों को क्रियात्मक रूप देने की भावना से उनका जीवन सराबोर था। सन्यासियों एवं विद्वान जनों का आदर सम्मान करना उनका मुख्य ध्येय था। संघर्षशील जीवन व्यतीत करते हुए यज्ञादि आध्यात्मिक कार्यों में उनकी विशेष रुची थी, इन कार्यों के प्रचार प्रसार में जीवन भर तत्पर रहे।

महाशय गोविंदराम जी का हृदय सरल तथा संवेदनशील होने के साथ, उनका जीवन सदैव प्रेरणादायक रहा। महाशय जी ने "सर्वे भवन्तु सुखिना" की भावना से हृदय की विशलता एवं आर्य समाज के दस नियमों को पालने में अग्रणी होकर तथा अपने जीवन में इन्हें क्रियात्मक रूप देकर, महर्षि के बताए मार्ग का अनुसरण किया। नारी जाति के उद्धार के प्रति सजग रहते हुए उच्चशरीफ में कन्या पाठशाला प्रारंभ कर "अविद्या का नाश विद्या की वृद्धि" के अनुरूप कार्य किया। "संसार का उपकार करना इस समाज का मुख्य उद्देश्य है" के अनुसार महाशय जी का जीवन व्यतीत हुआ।

ईश्वरीय प्रेरणा से दो व्यक्तिओं का जीवन भयावह स्थिति से सुरक्षित निकालना, महाशय जी के जीवन की विशेष उपलब्धि रही पाकिस्तान में श्री सोमदेव आर्य तथा भारत में आकर श्री राजेन्द्र सिंह जी को मृत्यु के मुख से निकालना, महाशय जी के जीवन में महानता के कार्य कहे जा सकते है।

सच्चे व्यक्तियों को आर्य समाज से जोड़ने में उनकी रूचि थी। यह अकाट्य सत्य है कि आर्य समाज ही एक ऐसी संस्था है जो विश्व का कल्याण करने में समर्थ है। ऐसी संस्था से वे मन से जुड़े हुए थे। अन्तिम क्षणों तक आर्य सिद्धान्तों के प्रचार प्रसार में प्रतिबद्धतापूर्वक निभाने में सक्रिय रहे, निस्सन्देह श्री गोविंदराम जी का सारा जीवन आर्य समाज के लिए समर्पित रहा।

– भीमसैन कामराह, शादीपुर, मैन बाजार, पटेल नगर, नई दिल्ली

माह अगस्त 2014 के आर्थिक सहयोगी

आर्य समाज विशाख एन्कलेव उत्तरी पीतमपुरा दिल्ली	त्रैमासिक	4500/–
आर्य समाज अनारव ली मन्दिर मार्ग, नई दिल्ली	मासिक	1000/–
आर्य समाज इन्द्रानग , बगलौर, कर्नाटक	मासिक	1000/–
ब्रिगेडियर के.पी. गुप ा जी सै.–15, फरीदाबाद	मासिक	1000/–
श्री नरेन्द्र मोहन वलेचा जी (महामंत्री) शुद्धि सभा	मासिक	500/–
श्रीमती स्वतन्त्रलता शर्मा जी 5वां रास्ता, बसतनगर बगलौर	मासिक	500/–
पुण्पावती पुरी दयानन्द आदर्श विद्यालय, आर्य समाज माडल बस्ती	मासिक	500/–
श्री अक्षय सेठी सुपुत्र श्री अनिल सेठी जी, विजय नगर दिल्ली		500/–
श्री आर.एस. शर्मा जी, इन्दिरा पुरम गाजियाबाद	मासिक	200/–
आर्य समाज करोल बाग, नई दिल्ली छः माह के लिए		3000/–
श्री एन. रनवीर जी, मसाब टैंक, हैदराबाद	आजीवन	300/–
श्रीमती अनुराधा सूद जी, प्रिंसीपल, राजकीय मा. सी. सेकेन्डरी स्कूल प्रागपुर जिला कांगड़ा (श्री जगजीत प्रसाद सूद)	आजीवन	300/–
कैप्टन रामशंकर सिंह जी यादव (पूर्व सैनिक) ग्राम+पो. कुम्भी, कानपुर	आजीवन	300/–
श्रीमती मीना लोधी जी, ग्राम+पो. दौंका जिला बुलन्दशहर		100/–

स्थिर निधि हेतु

ला. ओम प्रकाश अग्रवाल जी, संरक्षक शुद्धि सभा दिल्ली	25000/–
आर्य समाज शादी खामपुर वेस्ट पटेल नगर, नई दिल्ली	11000/–
श्री कीर्ति शर्मा जी करोल बाग, नई दिल्ली	5000/–
श्री आर्य धर्मार्थ ट्रस्ट, गुड़गांव (श्री पदम चन्द आर्य) 1100/–	
श्री सुरेन्द्र बुद्धि राजा जी, कीर्ति नगर, नई दिल्ली	1100/–
श्री रामनाथ सहगल जी प्रधान भा. हिन्दु शुद्धि सभा दिल्ली	1100/–
श्री सत्यप्रकाश आर्य जी, विशाखा एन्कलेव, दिल्ली	500/–

श्रीमती संतोष वधवा जी (नारायणा विहार नई दिल्ली) के द्वारा

श्रीमती नीरु मिनोचा जी, नारायणा विहार, नई दिल्ली	आजीवन	300/–
प्रिंसीपल जी, ज्ञान मन्दिर पब्लिक स्कूल, नारायणा विहार	आजीवन	300/–
श्रीमती मीना जी, पंजाबी डी.डी.फ्लैटस, हरिनगर, नई दिल्ली	आजीवन	300/–
श्रीमती विमला सुनेजा, नारायणा विहार नई दिल्ली	आजीवन	300/–
श्री रोहित कामरा जी, ओल्ड राजेन्द्र नगर, नई दिल्ली	आजीवन	300/–

श्री चन्द्रभान चौधरी जी द्वारा एकत्रित दान राशि

कुमारी गरिमा जी, बी.2 ब्लाक पश्चिम विहार, नई दिल्ली	मासिक	1000/–
श्रीमती चन्द्रकला राजपाल जी, पश्चिम विहार, नई दिल्ली	मासिक	500/–
श्री सुखदेव महाजन जी, विकासपुरी, नई दिल्ली	मासिक	50/–
डा. पुष्पलता वर्मा जी, आर्य समाज विकासपुरी, नई दिल्ली	मासिक	50/–
श्रीमती ऊषा कुकरेजा जी, आर्य समाज विकासपुरी, नई दिल्ली	मासिक	50/–
श्रीमती संतोष कोछड़ जी, आर्य समाज विकासपुरी, नई दिल्ली	मासिक	50/–

शुद्धि संस्कार

श्री समीर बाबु भाई, निवास बिल्डिंग नं. 4 फ्लैट नं. 54, करीमावाद सोसाइटी घोड़ दौड़ रोड–सुरत का इस्लाम धर्म से सत्य सनातन वैदिक धर्म में परावर्तन, समीर की स्वेच्छा अनुसार व जिलाधीश– बडौदा के आदेश क्रम संख्या ई सी एम ए जी धर्म परिवर्तन वशी 1081/14 दिनांक 29.4.14 के अनुरूप 21.5.2014, बुधवार सायं 6 बजे आर्य समाज बड़ौदा में आर्य समाज के पुरोहत श्री नारायणा प्रसाद मिश्रा जी द्वारा सम्पन्न कराया गया। तथा श्री समीर को सुमेर आर्य नये नाम से अलंकृत किया गया। इस पावन अवसर पर सुमेर के चार मित्रों , सहयोगियों ने भी भाग लिया – सुमेर जी व्यवसाय से इंजीनियरिग कालिज में आचार्य हैं।

–कृष्ण कुमार

।। ओ३म्।।

राष्ट, धर्म व मानवता के सबल रक्षक वेद–यज्ञ–योग साधना केन्द्र

आत्मशुद्धि आश्रम बहादुरगढ़ का

48वां स्थापना दिवस–वार्षिकोत्सव समारोह पर

ऋग्वेदीय बृहद् यज्ञ एवं निःशुल्क ध्यान योग विज्ञान शिविर

(शुक्रवार दिनांक 26 सितम्बर से बृहस्पतिवार दिनांक 2 अक्टूबर 2014 तक)

सानिध्य–पूज्य स्वामी धर्ममुनि जी दुग्धाहारी मुख्याधिष्ठाता आश्रम

योगनिर्देशक एवं यज्ञ ब्रह्मा : डॉ. स्वामी दिव्यानन्द जी सरस्वती, पातञ्जल योगधाम, ज्वालापुर, हरिद्वार

thearyasamaj.org

R.N.I. No. 43084/76 Date of Publication 01-09-2014 De hi Postal R.No. DL (N) 060/20.2-14
Posting Date : 2-3 Every Month

सेवा में,

शुद्धि समाचार

सितम्बर – 2014

समस्याएं "अनेक" और समाधान "एक"

– नारायण दास प्रयासी
4–बी/22, ओल्ड राजेन्द्र नगर, नई दिल्ली–60

आज का युग समस्यायों का युग है– काले धन की समस्या, बलात्कार की समस्या, रोगों की समस्या, शिक्षा की समस्या, अनुशासन की समस्या, धार्मिकता की समस्या, गंगा–यमुना की समस्या इत्यादि। इस देश में जो घटित हो रहा है, औरों मनुष्यों की भांति मैं भी उसका अनुभव करता हूँ। मैं समझता हूँ कि सब समस्याएं बुद्धिमानों की देन हैं। हम बुद्धिमान तो बहुत हैं, किन्तु मेधावी नहीं हैं। समाधान अपूर्व बुद्धिमानों के पास होता है, मात्र बुद्धिमानों के पास नहीं। प्रसिद्ध वैज्ञानिक एलर्बट आइस्टाइन कहते हैं कि **"बुद्धिमान समस्यायों को सुलझाते हैं, मेधावी जन समस्यायों को रोकते हैं"**।

यदि हम चाहते हैं कि समस्याएं पैदा ही न हों, तों हमें वेदों को और वैदिक सस्कृति को अपनाना होगा। इसके अतिरिक्त दूसरा कोई विकल्प नहीं है। वेद ईश्वर कृत हैं, इसलिये हम कह सकते हैं कि ईश्वर की आज्ञा–पालन से समस्याएं पैदा ही नहीं होगी। वैदिक सस्कृति मेधावी पुरुष उत्पन्न करती हैं और मात्र बुद्धिमान पश्चिमी सस्कृति की देन हैं। यह वैदिक संस्कृति ही प्रथम और उत्तम सस्कृति है। इसके अनेक प्रमाण हैं। ये प्रमाण इस प्रकार हैं।

1. तस्माद्यज्ञात्सर्वहुत ऋचः सामानि जज्ञिरे।
छन्दांसिजज्ञिरे तस्माद्य जुस्तास्माद जायत।। (यजु. अ.31)

अर्थात चारों वेद ईश्वर से उत्पन्न हुए हैं।

2. निजशक्त्यभिव्यक्तेः स्वतः प्रामाण्यम्– (सांख्यशास्त्र)

अर्थात् स्वाभाविक जो विद्या शक्ति है उससे प्रकट होने से वेदों का नित्यत्व और स्वतः प्रमाण सब मनुष्यों को स्वीकार करना चाहिये।

3. "सा प्रथमा संस्कृतिर्विश्ववारा" – (यजुर्वेद)

अर्थात् यही वैदिक संस्कृति विश्व की प्रथम आदि संस्कृति है।

4. जो जो जहां जहां भूगोलों का पुस्तकों अथवा मन में सत्यज्ञान प्रकाशित हुआ है और होगा, वह सब वेदों में से ही हुआ है क्योंकि जो जो सत्य विज्ञान है सो सो ईश्वर ने वेदों में धर रखा है। – (महर्षि दयानन्द सरस्वती)
– ऋग्वेदादि भाष्यभूमिक के पठन–पाठन विषय में।

5. मैं वेदों में कोई बात युक्ति विरुद्ध वा दोष को नहीं देखता, और उन्हीं पर मेरे सिद्धान्त वेदानुकूल हैं। (भ्रान्ति निवारण)

6. "यदि समूचा विश्व नष्ट हो जाए तो मात्र ईशोपनिषद् (यजुर्वेद का चालीस वां अध्याय) बचा लिए जाने से समूची मानवता के लिये समस्त अथाह ज्ञान समाहित है।" –जर्मन दार्शनिक व लेखक आर्थर शोपन हावर।

7. जन्म से लेकर मृत्यु–पर्यन्त मानव जीवन की इहलौकिक और पारलौकिक समस्त समस्याओं को सुलझाने के लिए "सत्यार्थप्रकाश" ग्रन्थ एकमात्र ज्ञान का भण्डार है।

8. यो अवमन्येत ते मूले हेतुशास्त्राश्रयाद् द्विजः।
स साधुभिर्बहिकार्यो नास्तिको वेदनिन्दकः। – मनु

अर्थात् जो वेद और वेदानुकूल आप्त पुरुषों के किये शास्त्रों का अपमान करता है उस वेदनिन्दक नास्तिक को जाति, पंक्ति और देश से बाहर कर देना चाहिये।

9. आर्ष ग्रन्थों को पढ़ना ऐसा है कि जैसा एक गोता लगाना बहुमूल्य मोतियों का पाना। अनार्ष ग्रन्थों का पढ़ना ऐसा है कि जिस को बड़े परिश्रम से पढ़ के अल्प लाभ उठा सकें जैसे पहाड़ का खोदना कौड़ी का लाभ होना। – (दया नन्द सरस्वती)

आज पश्चिमी सस्कृति में पूरी तरह से रंगे होने के कारण हमारे नेता प्रजा को अपने जैसा बनाना चाहते हैं क्योंकि स्वामी दयानन्द के शब्दों में मनुष्य जैसा स्वयं होता है, अन्यों को भी वैसा ही बनाना चाहता है।।

इसलिये समस्यायों के समाधान निकालने की उम्मीद विद्वानों से की जा सकती है, नेताओं से नहीं क्योंकि "विद्वत्त्वं च नृपत्व च नैव तुल्यं कदाचन।
स्वदेशे पूज्यते राजा विद्वान् सर्वत्र पूज्यते। – चाणक्य नीतिशास्त्र का श्लोक है।

अर्थात् विद्वान और राजा की कभी तुल्यता नहीं हो सकती क्योंकि राजा अपने राज्य ही में मान और सत्कार पाता है और विद्वान सर्वत्र मान और प्रतिष्ठा को प्राप्त होता है। सारांश यह है कि "अनेक" समस्यायों का समाधान निकालने हेतु केवल "एकमात्र" साधन है वेदानुकूल आचरण अर्थात ईश्वर की आज्ञा पालन। दूसरा कोई मार्ग नहीं है। इसलिये ईश्वर जीव से कहता है कि :
वो तू करता है। जो तू चाहता है और होता है जो मैं चाहता हूँ। तू वो कर जो मैं चाहता हूँ फिर होगा वो जो तू चाहता है।

प्रश्न – परमेश्वर क्या चाहता है?

उत्तर – सबकी भलाई और सबके लिये सुख चाहता है परन्तु स्वतन्त्रता के साथ किसी को बिना पाप किये पराधीन नहीं करता। –सत्यार्थ प्रकाश 7 समुल्लास

इसलिये यदि हम भी ईश्वर की भांति सबकी भलाई सबके लिये सुख चाहें तो हमारी समस्यायें उत्पन ही नहीं होगी, और यदि हो भी गई तो हम प्रभावित नहीं होंगे और ईश्वर कृपा से हमारे धर्मयुक्त पुरुषार्थ से हमारी समस्यायों का समाधान निकलने में विलम्ब नहीं होगा।

क्यों हुआ हमारा यूँ अवसान?

छे अरब जन भरा जहान।
तीन क्रिस्तान, दो हैं तुर्कान।
एक अरब में हिंदू बैठे
सिसक रहे तीसरे पौदान।

मैं किया गहरा चिंतन,
जन्म लिये धर्म जब से यवन।
दो हजार वर्षों में ही,
तब से ही हमारा हुआ पतन।

मूर्ख, कायर बन द्वेष–दंभ में
उन से हम सदा हारे।
फिर भी धर्मगुरु रहे सुलाते,
गा–गा झूठे जीत हमारे।

राष्ट्र–धर्म से विमुख ये भीरु,
पाखंडों में गये सब भूल।
सोमनाथ लुट रहा ये तब भी,
लिये थे माला, ना त्रिशूल।

ऐसे झूठों को तज–तज के
हम भी अब बन जायें वीर।
तभी होगी हिन्दुओं की जीत
देश के बदलें, फिर तस्वीर।।

–आर्य प्रहलाद गिरि, निंगा (प. बं.)

"गुल्लामी"

हमारी दीवानगी इंग्लिस्तान के प्रति
वे चले गये हमें छोड़कर
लेकिन हमने उन्हें नहीं छोड़ा
उनकी भाषा सीखकर
हम स्वयं को शिक्षित
गौरवान्वित महसूस करते है।
उनके कल्चर को ओढ़कर हम
स्वयं को आधुनिक समझते हैं।
उनके कपड़े उनके देश के
बने सामान उपयोग कर
हम धन्य समझते हैं खुद को।
हम आज भी पश्चिम की ओर
ताकते हैं पढ़ाई के लिए
रोजगार के लिए
वहाँ बसने के लिए
डालर, पाउन्ड के चक्कर में
हम हंटर खाने को तैयार हैं
पहले तन पर घाव थे
उनकी चोट से
अब हमारा मन–मस्तिष्क
उनका गुलाम है
उनकी हर चीज का
ये मन से स्वीकार
गुलामी
इससे आजादी मुश्किल है
हम पहले से ज्यादा
गुलाम हैं
स्वयं स्वीकार गुलामी से
आजादी नामुमकिन है।

–देवेन्द्र कुमार मिश्रा
पाटनी कालोनी, भरत नगर, चन्दनगांव
छिन्दवाडा (म.प्र.)

मुद्रक, व प्रकाशक – रामनाथ सहगल द्वारा गुरमत प्रिटिंग प्रेस, 1337, संगतरासन, पहाड़ गंज, नई दिल्ली–55 दूरभाष : 23561625, से मुद्रित एवं भारतीय हिन्दू शुद्धि सभा, 6949, बिड़ला लाइन दिल्ली–7 दूरभाष : 23847244 से प्रकाशित। सम्पादक : डॉ. कैलाश चन्द्र शास्त्री